# EPISCOPAL ORDINATION

## Most Rev. Visuvasam Selvaraj

Bishop of Port Blair

on Saturday

21st August 2021, 04.00 p.m.

STELLA MARIS CATHEDRAL

| | |
|---|---|
| **FULL NAME** | **VISUVASAM SELVARAJ, S/o (Late) Mr. S. Viagappan and (Late) V. Maria Ranjidham** |
| **DATE OF BIRTH** | 04.01.1966 - Baptised in Our Lady of Guidance Church, R.A.Puram, Chennai - 8TH CHILD IN THE FAMILY OF 9 CHILDREN. Eight sons and one daughter. As of now, five brothers have died. |
| **SCHOOL EDUCATION** | Class 1 to 5: Avvai Home, Adyar, Chennai |
| | 6th to 10th: Kumara Raja Muthiah School, Adyar, Chennai. |
| **VOCATION PROMOTERS** | Rev. Fr. Rayappa and Rev. (Late) Fr. Antonysamy, Parish Priests of Our Lady of Guidance Church, Foreshore Estate, Chennai. (Late) Fr. Krupakaran, Parish Priest of Visitation Church, Abiramapuram, Chennai, who helped to join the Diocese of Port Blair. I also gratefully remember Late Fr. Antonysamy and Late Bishop Devotta for their help in choosing the Diocese of Port Blair. |
| **MINOR SEMINARY** | Entered St. Thomas Minor Seminary, Santhome, on 15th June, 1981 for the Diocese of Madras-Mylapore |
| | 11th and 12th: Santhome Senior Secondary School, Chennai |
| | 2 Years Minor Seminary course in Chennai. Finished in April, 1985. |
| **MAJOR SEMINARY 1985-1988** | Three years Philosophy in Sacred Heart Major seminary, Poonamallee, Chennai |
| | BA History from Madras University (correspondence) and B.Com (correspondance) |
| **REGENCY** | Opted for the diocese of Diocese in 1987. Arrived in Port Blair on 15th June, 1988. |
| | June to October 1988 - Nirmala Boys Hostel under Fr. Peter Gomes, SFX, Fr. Devanand, SFX and Fr. Michael Cruz, SFX |
| | November to December - St. Ignatius Church, Diglipur Under Fr. Vital Ekka, SJ |
| | January to June 1989 - St. Thomas Church, Mayabunder Under Rev. Fr. Salu Fernandes, SFX and Fr. Christopher Lakra, SFX |
| | July to April 1990 - Our Lady of Rosary Church, Oralkatcha Under Fr. Peter Soares, SFX and Fr. Custodio, SFX |
| **MAJOR SEMINARY** | 1990 – 1994, Four years of Theology in St. Albert's College, Ranchi, Jharkhand |
| **ORDINATION** | Ordained by Most Rev. Alex Dias, SFX, on 8th May, 1994 at St. Thomas Church, Mayabunder. |
| | **APPOINTMENTS** |
| **1994-1995** | Asst. Parish Priest of Stella Maris Cathedral, In-charge of Nirmala Boys Hostel, Sagritara Pre-Primary School, Chaplin for the Tamil Community and Asst. Diocesan Procurator. |
| **1996-1997** | Diocesan Procurator, In-charge of Diocesan Projects |
| **1998** | Asst. Parish Priest in Mayabunder |
| **1999-2001** | Studies in St. Peter's Pontifical Seminary - Masters in Canon Law |
| **2001 - 2006** | Diocesan Financial Administrator and Project In-charge |
| **2005-2006** | Director - Diocesan Social Service Centre |
| **2006-2010** | Parish Priest, St. Joseph Catholic Church, Katchal, Nancowrie Islands |
| **2010-2013** | Parish Priest, Stella Maris Cathedral, Port Blair |
| **2014-2015** | Rector, Our Lady of Vailankanni Shrine, Panighat, South Andaman, In-charge of Diocesan Projects |
| **2015-2017** | Diocesan Financial Administrator |
| **2017-2018** | Vicar General & Chaplin for Tamil Catholic Community. |
| **1994-1999, 2001-2006, 2010-2018** | Member of the Diocesan Consultors |
| **2001 onwards** | Judicial Vicar/ Chancellor |
| **9th January 2019 onwards** | Diocesan Administrator |
| **29th June, 2021** | Appointed Bishop of Port Blair |
| **21st August, 2021** | Episcopal Ordination |
| | Principal Consecrator: Most Rev. Alex Dias, Bishop Emeritus of Port Blair<br>Co-Consecrators: Most Rev. Leopoldo Girelli, Apostolic Nuncio in India<br>: Most Rev. Felix Toppo, SJ., Archbishop of Ranchi |

# THE RITES FOR ORDINATION OF A BISHOP

## Introductory Rites and Liturgy of the Word

1. When everything is ready, the procession moves through the Church to the altar in the customary manner. The Altar Server, carrying the Gospel Book, and other altar servers are followed by the Concelebrating Priests, then come the Bishop-elect walking between the two assistant priest, the Ordaining Bishops, and last the Principal Consecrator, with two assistant Assistant Priests close behind him. On their arrival at the altar, all make the usual reverence and go to the places assigned to each. The seating arrangement should clearly distinguish the Bishops from the priests.

Meanwhile the entrance Psalm or hymn is sung.

2. The Mass is celebrated in the usual way until after the Gospel.

**प्रवेश गान**

मोंय तो बनबूँ संसार केर ज्योति
हयरे भला पृथ्वी केर नमक भी
रोशनी देबूँ सोभे दिल के
बेस से रखबूँ विश्वास के } 2

1. झर-झर झर कृपा केर झरना बनबूँ
घर-दूरा के जोइड़ देबूँ } 2
येसु केर प्यार से जोइड़ देबूँ
रिश्ता हमर के मजबूत करबूँ } 2

2. सामर्थ्य से मोके भइर देऊँ
तोरे संदेशवाहक मोके बनाउँ } 2
तोर प्यार से सिंचल जाएके
प्रेम केर सागर बइन के } 2

**दया याचना**

दया करो प्रभु हे मेरे नाथ
कृपा करो प्रभु हे मेरे नाथ } 2
तेरी करूणा प्रेम शांति मेरे सारे पाप हरे - 2
मेरे ईश्वर मुझे बचाओ - 2
मन मेरा निर्मल कर दो - 2
मुझ पर अपनी कृपा करो
दया करो....

**महिमा**

को. महिमा तुझे महिमा हो - 4
ऊँचे गगन में, नीचे धरा पर - 2
महिमा तुझे महिमा हो - 4

1. हम तेरा यश गाते
धन्य मनाते अराधते } 2
जग के स्वामी सर्वशक्तिमान
तेरी स्तुति बारम्बार } 2

2. एकलौते प्रभु पुत्रेश्वर
पाप जो हरता परमेश्वर } 2
पिता के दाएँ विराजमान
सुन ले हमारी विनय सदा } 2

3. पावन है प्रभु त्रानेश्वर
महिमा तुझको हे ईश्वर } 2
आत्मा और पिता के संग
तेरी प्रशंसा सदा सदा } 2

## पहला पाठः नबी यिरमियाह का ग्रन्थः 23:1-6

"धिक्कार उन चरवाहों को जो मेरे चरागाह की भेड़ों को नष्ट और तितर-बितर हो जाने देते हैं!" यह प्रभु की वाणी है। इसलिए प्रभु, इस्राएल का ईश्वर अपनी प्रजा को चराने वालों से यह कहता है, "तुम लोगों ने मेरी भेड़ों को भटकने और तितर-बितर हो जाने दियाः तुमने उनकी देखरेख नहीं की। देखो! मैं तुम लोगों को तुम्हारे अपराधों का दण्ड दूँगा। यह प्रभु की वाणी है। इसके बाद मैं स्वयं अपने झुण्ड की बची हुई भेड़ों को उन सभी देशों से एकत्र कर लूँगा, जहाँ मैंने उन्हें बिखेर दिया हैः मैं उन्हें उनके अपने मैदान वापस ले चलूँगा और वे फलेंगी-फूलेंगी। मैं उनके लिए ऐसे चरवाहों को नियुक्त करूँगा, जो उन्हें सचमुच चरायेंगे। तब उन्हें न तो भय रहेगा, न आतंक और न उन में से एक का भी सर्वनाश होगा। यह प्रभु की वाणी है। प्रभु यह कहता है, वे दिन आ रहे हैं, जब मैं दाऊद के लिए एक न्यायी वंशज उत्पन्न करूँगा। वह राजा बन कर बुद्धिमानी से शासन करेगा और अपने देश में न्याय और धार्मिकता स्थापित करेगा। उसके राज्यकाल में यूदा का उद्धार होगा और इस्राएल सुरक्षित रहेगा और उसका यह नाम रखा जायेगा- प्रभु ही हमारी धार्मिकता है।

- प्रभु की वाणी।

### अंतरभजन

All to Jesus I surrender,
All to Him I freely give;
I will ever love and trust Him,
In His presence daily live.

*Refrain*:
I surrender all, I surrender all;
All to Thee, my blessed Savior,
I surrender all.

All to Jesus I surrender,
Humbly at His feet I bow;
Worldly pleasures all forsaken,
Take me, Jesus, take me now.

All to Jesus I surrender, Make me,
Savior, wholly Thine;
Let me feel the Holy Spirit,
Truly know that Thou art mine.

All to Jesus I surrender,
Lord, I give myself to Thee;
Fill me with Thy love and power,
Let Thy blessing fall on me.

All to Jesus I surrender,
Now I feel the sacred flame;
Oh, the joy of full salvation'
Glory, glory, to His Name'

## दूसरा पाठः कुरिन्थियों के नाम संत पौलुस का दूसरा पत्रः 9/ 6-11

इस बात का ध्यान रखें कि जो कम बोता है, वह कम लुनता है और जो अधिक बोता है, वह अधिक लुनता है। हर एक ने अपने मन में जितना निश्चित किया है, उतना ही दे। वह अनिच्छा से अथवा लाचारी से ऐसा ने करे, क्योंकि "ईश्वर प्रसन्नता से देने वाले को प्यार करता है।" ईश्वर आप लोगों को प्रचूर मात्रा में हर प्रकार का वरदान देने में समर्थ है, जिससे आप को कभी किसी तरह की कोई कमी नहीं हो, बल्कि हर भले काम के लिए चन्दा देने के लिए भी बहुत कुछ बच जाये। धर्मग्रन्थ में लिख है- उसने उदारतापूर्वक दरिद्रों को दान दिया है, उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है। जो बोने वाले को बीज और खाने वाल को भोजन देता है, वह आप को बोने के लिए बीज देगा, उसे बढ़ायेगा और आपकी उदारता की अच्छी फसल उत्पन्न करेगा। इस तरह आप लोग हर प्रकार के धन से सम्पन्न हो कर उदारता दिखाने में समर्थ होंगे।

- प्रभु की वाणी।

### जयघोष

अल्लेलूया, अल्लेलूया, अल्लेलूया, अल्लेलूया
अल्लेलूया, अल्लेलूया, अल्लेलूया, अल्लेलूया - 4
ईश वचन मार्ग वचन, राह दिखाता है वचन
ईश जीवन आदर्श जीवन देता है वचन - अल्लेलूया - 4

## सुसमाचार : संत मारकुसः 6/ 30- 34

प्रेरितों ने ईसा के पास लौट कर उन्हें बताया कि हम लोगों ने क्या-क्या किया और क्या-क्या सिखलाया है। तब ईसा ने उन से कहा,"तुम लोग अकेले ही मेरे साथ निर्जन स्थान चले आओ और थोड़ा विश्राम कर लो"; क्योंकि इतने लोग आया-जाया करते थे कि उन्हें भोजन करने की भी फुरसत नहीं रहती थी। इसलिए वे नाव पर चढ़ कर अकेले ही निर्जन स्थान की ओर चल दिये। उन्हें जाते देख कर बहुत-से लोग समझ गये कि वह कहाँ जा रहे हैं। वे नगर-नगर से निकल कर पैदल की उधर दौड़ पड़े और उन से पहले ही वहाँ पहुँच गये। ईसा ने नाव से उतर कर एक विशाल जनसमूह देखा। उन्हें उन लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह थे और वह उन्हें बहुत-सी बातों की शिक्षा देने लगे।

- प्रभु का सुसमाचार।

# ORDINATION - RITE

3. The ordination of a bishop begins after the Gospel. While all stand, the hymn, **उतर, हे आत्मा सृजनहार** is sung, or another hymn similar to it, depending on local custom.

The Principal consecrator and the consecrating bishops, wearing their Mitres, go to the seats prepared for the Ordination and sit.

The Bishop- elect is led by his assisting priests, to the chair of the Principal consecrator, before whom he makes a sign of reverence.

## उतर, हे आत्मा सृजनहार

1. उतर, हे आत्मा सृजनहार,
अपने लोगों को दर्शन दे
वरदान आशिष से भर जावें,
जो आत्माएँ तूने सृजीं।

2. तू कहलाता है दिलासा,
सर्वोच्च ईश्वर का कृपादान
जीता, सोता, आग करूणा,
और आत्मा का शीतल मरहम।

3. सात शाखी झरना कृपा का,
ईश के दायें हाथ का वरदान।
पिता ईश का तू प्रतिज्ञात,
तू सत्य वाणी का दाता।

4. इन्द्री को प्रकाशमान कर दे,
हृदय में प्रेमाग्नि सुलगा।
झुकती है नीचे पापमय देह,
उसके दिन दिन नया बल दें

5. बैरी को हमसे दूर हटा,
हमें तुरन्त शांति बल दें
कि पाकर तेरी अगुवाई,
हानि से हम बचे रहें।

6. हम पिता को जान लें तुझसे,
हो विदित पुत्रेश ख्रीस्त हमें।
तुझी दोनों के आत्मा में,
दृढ़ विश्वास सदा हम रखें।

7. पिता ईश्वर की बड़ाई हो,
पुत्रेश ख्रीस्त की भी जय जय हो।
मुरदों में से जो जी उठा,
शांतिदाता को भी युग लो। आमेन।

## PRESENTATION OF THE BISHOP-ELECT

4. One of the Priests addresses the Principal consecrator.

"अति मान्यवर पिता, अलेक्स डायस, पोर्ट ब्लेयर कलीसिया का दीन निवेदन है कि आप श्रद्धेय फादर, विश्वासम सेल्वाराज को धर्माध्यक्ष–अभिषेक प्रदान करें।

## APOSTOLIC LETTER

5. The Principal Consecrator asks him:

क्या आपको सन्त पिता फ्रांसिस का आदेश–पत्र प्राप्त है?

**He replies:** हॉ, मुझे प्राप्त है।

**Consecrator:** पढ़ सुनाया जाये।

**Everyone sit while the document is read.**

**CONSENT OF THE PEOPLE**

After the reading, all Say: ईश्वर को धन्यवाद।

**HOMILY**

6. Then the Principal consecrator, while all are sitting, briefly addresses the Clergy, the people, and the Bishop-elect on the duties of a Bishop. He may use these words:

**EXAMINATION OF THE CANDIDATE**

7. The Bishop-elect then rises and stands in front of the Principal Consecrator, who questions him.

**Consecrator :** बहुत पुराने समय से कलीसिया के आचार्य यह आदेश देते आये हैं कि जो भाई धर्माध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित होते हैं उनकी जॉच जनता के सामने हो, जिससे कि धर्म की बातों और कर्त्तव्य–पालन में उनकी दृढ़ता सब को मालूम हो जाये।

इसलिए, हे मेरे प्रिय भाई, क्या आप उस कार्यभार को जिसे हमने प्रेरितों से पाया और जिसे आपके माथे पर हाथ रखकर हम आपको सौंपने वाले हैं, पवित्र आत्मा की सहायता से, जीवन भर सॅभालते रहने का संकल्प करते हैं?

**Elect:** मैं यह संकल्प करता हूॅ।

**Consecrator:** क्या आप खीस्त का सुसमाचार पूरी ईमानदारी से और अविराम फैलाने की प्रतिज्ञा करते हैं?

**Elect:** मैं यह प्रतिज्ञा करता हूॅ।

**Consecrator:** क्या आप विश्वास की उन सब बातों को जिन्हें हमने प्रेरितों से पाया है और जिन्हें पवित्र कलीसिया सदा–सर्वत्र स्वीकार करती आयी है, विशुद्ध और अविकृत रखने की प्रतिज्ञा करते हैं?

**Elect:** मैं यह प्रतिज्ञा करता हूॅ।

**Consecrator:** क्या आप कलीसिया, खीस्त के शरीर का निर्माण करने और धर्माध्यक्ष–वर्ग से जुटे रहके प्रेरित सन्त पेत्रुस के उत्तराधिकारी सन्त पिता के अधिकार में रहने तथा उसी कलीसिया से संयुक्त रहने की प्रतिज्ञा करते हैं?

**Elect:** मैं यह प्रतिज्ञा करता हूॅ।

**Consecrator:** क्या आप प्रेरित सन्त पेत्रुस के उत्तराधिकारी सन्त पिता के प्रति अटल भक्ति दिखाने को तैयार हैं?

**Elect:** मैं तैयार हूँ।

**Consecrator:** क्या आप एक धर्मनिष्ठ पिता स्वरुप अपने पुरोहितों और उपयाजकों के साथ ईश्वर की प्रजा की देख–रेख करने और मुक्ति का मार्ग दिखाने को तैयार हैं?

**Elect:** मैं तैयार हूँ।

**Consecrator:** क्या आप प्रभु ईश्वर के नाम में गरीबों, परदेशियों और सभी निस्सहाय लोगों को सहानुभूति और दया दिखाने की प्रतिज्ञा करते हैं?

**Elect:** मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ।

**Consecrator:** क्या आप भले चरवाहे की तरह खोयी भेड़ों की तलाश करने और प्रभु के बिखरे झुंड को एकत्र करने का दृढ़ संकल्प करते हैं?

**Elect:** मैं यह दृढ़ संकल्प करता हूँ।

**Consecrator:** क्या आप ईश्वर की प्रजा के लिए निरन्तर प्रार्थना करने और सर्वश्रेष्ठ पुरोहिती कार्यों को ऐसा निबाहने का संकल्प करते हैं कि किसी को आप पर दोष लगाने का मौका न मिले?

**Elect:** ईश्वर की मदद से मैं यह दृढ़ संकल्प करता हूँ।

**Consecrator:** प्रभु ईश्वर, जिसने आप में यह शुभ कार्य आरम्भ किया, उसे पूर्णतः समाप्त भी करे।

## INVITATION TO PRAYER

8. Then all stand, and the Principal Consecrator, without his Mitre, invites the people to Pray:

प्रिय भाईयो और बहनो, कलीसिया की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए ईश्वर ने इस व्यक्ति को चुन लिया है। उसी सर्वशक्तिमान् ईश्वर से हम प्रार्थना करें कि अपनी असीम दया से अपने इस दास को प्रचूर कृपादानों से भर दे।

**Assisting Priest :** हम घुटने टेकें।

## LITANY OF THE SAINTS

9. The Bishop-elect prostrates himself and, all kneel at their places.

**संतों की स्तुति विनती**

After the Litany, the Principal Consecrator (alone stands and) with hands joined, sings or says:

**Consecrator:** हे प्रभु ईश्वर, हमारी प्रार्थना सुन : अपने इस दास को पुरोहिती कृपा की पूर्णता प्रदान कर और इन्हें अपने आशीर्वाद से शक्ति प्रदान कर। हमारे प्रभु खीस्त के द्वारा।

**All:** आमेन।

## LAYING ON OF HANDS

10. All rise. The Principal Consecrator and the consecrating bishops stand at their places, facing the faithful. The Bishop-elect rises, goes to the Principal Consecrator and kneels before him.

The Principal Consecrator lays his hands upon the head of the Bishop-elect, in Silence. After him, all the other bishops present do the same.

## BOOK OF THE GOSPELS

11. Then the Principal Consecrator places the open Book of the Gospels upon the head of the Bishop-elect; Two Assisting Priests, standing at either side of the bishop-elect, hold the Book of the Gospels, above the head until the prayer of consecration is completed.

## PRAYER OF CONSECRATION

12. Next the Principal consecrator, with his hands extended over the Bishop-elect, sings/says the prayer of consecration:

हे ईश्वर, हमारे प्रभु येसु खीस्त के पिता, दया–स्रोत और हर दिलासा देनेवाले, तू अपने स्वर्गधाम से उत्पति के पहले ही से सारी सृष्टि को जानता है और छोटी–सी–छोटी वस्तु की भी सुधि लेता है। अपनी कृपाकारिणी शिक्षा द्वारा तूने अपनी कलीसिया में कानून की व्यवस्था की : इब्राहीम की सन्तान को आदिकाल से पवित्र जाति होने के लिए चुन लिया : अपने पवित्र मंदिर में निरन्तर उपासना होते रहने के लिए अध्यक्षों एवं पुरोहितों को नियुक्त किया और इस तरह आरम्भ से आज तक तेरे निर्वाचितों द्वारा तेरा यशोगान होते आया है।

(The following part of the prayer is recited by all the consecrating Bishops, with hands joined:)

**इसलिए अपने चुने हुए इन दास पर वह सामर्थ्य उँड़ेल दे जो तुझ ही से प्रसृत होता है, वह श्रेष्ठ आत्मा जिसे तूने अपने प्रिय पुत्र येसु खीस्त को दिया और जिसे उन्होंने स्वयं अपने प्रेरितों को प्रदान किया। प्रेरितों ने तेरी प्रशंसा और महिमा फैलाने के लिए हर जगह तेरे पवित्र निवास–स्थान स्वरुप कलीसिया की स्थापना की।**

(Then the Principal Consecrator continues alone)

हे स्वर्गिक पिता, जो हृदयों की सभी बातों को जानता है, अपने इन दास को, जिन्हें तूने धर्माध्यक्ष निर्वाचित किया है, कृपादानों से भर दे कि यह तेरे पवित्र रेवड़ की उचित रखवाली करें और

दिन–रात तेरी सेवा करते हुए तेरे सामने महापुरोहित का कर्तव्य दोषरहित निबाहें। यह तेरी पवित्र कलीसिया की भेंट तुझे अर्पित करते रहें जिससे हमारे प्रति तेरी दयादृष्टि बनी रहे।

पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा, तेरी आज्ञा के अनुकूल पापक्षमा करने के लिए, इन्हें महापुरोहिती अधिकार दे। रेवड़ के सेवा–कार्य–भार का वितरण यह तेरे आदेशानुकूल करें और जो अधिकार तूने अपने प्रेरितों को दिया उसी के अनुसार यह सभी बन्धन खोलें।

इनकी विनम्रता और सदाचरण तेरे पुत्र येसु ख्रीस्त द्वारा अर्पित एक सुगन्धित और रुचिकर उपहार स्वरुप तुझे अपनी पवित्र कलीसिया में महिमा, सामर्थ्य और समादर मिलती रहती है।

After the prayer of consecration, the Assisting Priests remove the Book of the Gospels; the Principal Consecrator and the consecrating Bishops wearing their Mitres, sit.

## ANOINTING OF THE BISHOP'S HEAD:

13. The Principal Consecrator puts on a Linen gremial, takes the Chrism, and anoints the Head of the Bishop, who kneels before him. He says:

**Consecrator:** जिस ईश्वर ने आपको ख्रीस्त की पुरोहिताई का साझी बनाया है, वही इस रहस्यपूर्ण अभ्यंजन का तेल आप पर उँडेल दे और आपको आध्यात्मिक आशीर्वाद द्वारा फलदायक बनाये।

## PRESENTATION OF THE BOOK OF THE GOSPELS:

14. He then hands the Book of the Gospels to the Newly Ordained Bishop, saying:

**Consecrator:** सुसमाचार–ग्रन्थ ग्रहण कीजिए और हमेशा बड़े धीरज से सिखाते हुए, ईश्वर का वचन प्रचार कीजिए।

Afterwards the deacon/Assisting Priest takes care of the Book of the Gospels.

## INVESTITURE WITH RING, MITRE AND PASTORAL STAFF

15. The Principal Consecrator places the ring on the ring-finger of the new Bishop's right hand, saying:

**Consecrator:** इस अँगूठी को ग्रहण कीजिए, जो विश्वास की मोहर है, और पूरी चौकसी एवं दृढ़ विश्वास से ईश्वर की दुलहिन, पवित्र कलीसिया की रक्षा कीजिए।

Thereafter the chief Consecrator places the Mitre on the Head of the New Bishop, saying:

**Consecrator:** इस किरीत को ग्रहण कीजिए। आपके जीवन में पवित्रता का प्रकाश चमके, जिस से महा गड़ेरिये के आने पर आप परलोक का अविनाशी मुकुट धारण कर सकें।

Lastly, he gives the pastoral Staff to the new Bishop, and says:

**Consecrator:** यह अधिकार–दंड लीजिए जो गड़ेरिये का निशान है, और उस समस्त रेवड़ की रखवाली कीजिए जिस में कलीसिया के शासन हेतु पवित्र आत्मा ने आपको धर्माध्यक्ष नियुक्त किया है।

## SEATING OF THE BISHOP

16. All stand. The Principal Consecrator, invites the New Bishop to occupy the Episcopal Chair.

## KISS OF PEACE

17. The New Bishop then sets aside his staff and receives the kiss of peace from the Principal Consecrator and all the other Bishops.

After the investiture rite and until the end of the ordination the Choir may sing Ps. 96, or another appropriate song.

### शांति चुम्बन

शांति की नदिया मुझको बनाना प्रभु - 2
1. मैं तो बहूँगा रेगिस्तानों से - 2
बंजारों को जीवन जल मैं बाटूँगा

2. मैं तो बहूँगा रोग शय्याओं से - 2
रोगियों को सांत्वना मैं बाटूँगा

3. मैं तो बहूँगा घाट पठारों से - 2
जीवन की हर विपत्ति को सह लूँगा

Holy Mass is celebrated in the customary manner. The Creed is said. The Prayers of the Faithful is Omitted.

### चढ़ावा

क. पडैप्पु एल्लाम उम्मके सोंदम
नानुम उन्दन कईवन्नम
कुयिलगल पाडुम किलिगल पेसुम } 2
एन वाल्वु इसइक्कुम उन रागमे

1. इयरकई उनद वोवियम } 2
इनई इल्लाद कावियम
अगिलम एन्नुम आलयम } 2
नानुम अदिल ओर आगमम
उल्लम एन्दन उल्लम } 2
अद एन्नालुम उन इल्लमे

2. इदयम एन्नुम वीनैयिल } 2
अन्बै मीटुम वेलैयिल
वसन्द रागम केटकवे } 2
एलै एनिनल वारूमे
तन्देन एन्नै तन्देन } 2
येनरूम एन वाल्वु उन्नोडदान

**ख.** मुझको तेरे हाथों में समर्पित करता हूँ
मुझे अपना जानकर तुम स्वीकारो
1. सबको सब कुछ मिल जाए, यही तेरी इच्छा
प्राण देकर तूने हम सबको, मुक्त कर दिया } 2
मैं भी किसी को जीवन देना, यही तुम्हारी इच्छा है
अब तो स्वामी मुझको शक्ति दो
हे भगवन पूरा करूँ तेरा वचन
2. तेरे जीवन में मैंने, सम्पूर्ण जीवन पाया
स्वार्थ को छोड़कर मैं तेरा हो गया } 2
अब तो मेरे दिल में आ जा
मुझे अब किसी बात का डर नहीं
अब तो....

## स्तुतिगान

पावन-पावन प्रभु परमेश्वर
सकल सृष्टि के जगदीश्वर } 2
पावन ....... पावन पावन प्रभु तेरा नाम - 2

1. तेरी महिमा कीर्ति प्रशंसा
आज उदित है अवनि अंबर } 2
तेरी ही जय जयकारों से
गूँज रहा सर्वोच्छ गगन
प्रभु पावन है पावन - 2

2. धन्य है वे जो आते है
नाम प्रभु का जो गाते है } 2
तेरी ही जय जयकारों से
गूँज रहा सर्वोच्छ गगन
प्रभु पावन है पावन - 2

## LITURGY OF THE EUCHARIST

18. The rite for the con-celebration of Mass is followed, the special form of Hane Igitur:

- Eucharistic Prayer III

प्रभुवर, अपने सेवक सन्त पिता फ्रांसिस, हमारे धर्माध्यक्ष ––––– (तेरे दीन सेवक) जिन्होंने आज पोर्ट ब्लेयर धर्मप्रान्त की कलीसिया में गड़ेरिये के पद के लिए अभिषेक ग्रहण किया है, सभी धर्माध्यक्षों, सारे याजकवर्ग तथा इस पृथ्वी पर समस्त यात्री कलीसिया को विश्वास और प्रेम में दृढ़ रखने की कृपा कर।

## ईश मेमना

हे ईश्वर के बलित मेमने
तुम हर लेते पाप जगत् के } 2
हम पर दया करो - 2

हे ईश्वर के बलित मेमने
तुम हर लेते पाप जगत् के
शांति प्रदान करो - 2

## परमप्रसाद

**क.**

1. अप्पतिन रूपत्तिल ऐन्निल
आगदना कुमन इशू } 2
अणयेनमे इन्डेयुलिल
अदुमात्रम न्यान कोदिप्पू } 2

को0 वा वा एन एशुनाधा
वा वा एन स्नेहनाधा } 2
वन्नु वसीचिडु एन्निल
निन स्नेहम एन्निल निरक्यू

2. अंग्गेंडे उल्लतिल वन्नाल
अरूताताएल्लाम अगालुम } 2
अरूलुन्ना मुइिगल केट्टन
अगतारिल शांति निरयुम } 2

3. अरिवोड एत्रयो निमिशम
अगन्नुपोइ निन मुन्नबिल निन्नुम } 2
अलिवोड निन कईगलाले
अडियेने चेर्तना चीडु } 2

**ख.**

हे प्रभु तू मेरा प्रेमी पिता है
साथ मेरे तू सदा रहता है
तू ही प्रभु पालनहार तू ही तारणहार - 2

1. तूने मुझे जीवन दिया
तूने मेरा पालन किया - 2
हे प्रभु हे गुरू - 2
तुझको ही प्यार करूँ, मेरा सहारा है तू -2

2. जन्म से पहले ही मुझे चुना है
तेरी सेवा करने सदा - 2
तेरी आत्मा मुझे दिया है - 2
तेरे ही साथ रहूँ, मेरा जीवन है तू - 2

## Concluding Rite

### HYMN OF THANKSGIVING AND BLESSING

19. At the conclusion of the prayer after Communion the hymn 'Te Deum' or another similar hymn of thanksgiving is sung. Meanwhile, the New Bishop is led by the consecrating Bishops through the Church, and he blesses the congregation.

### प्रभु का धन्यवाद करूँगा

प्रभु का धन्यवाद करूँगा उसकी संगति में सदा रहूँगा
साथ चलूँगा मैं जय जरूर पाऊँगा, प्रभु का धन्यवाद करूँगा

1. न देगी मुझे दुनिया कभी भी कोई सुख और शान्ति आराम
मेरे येसु के साथ धन्य संगति में सदा मिलती खुशी मुझको

2. मेरी जिन्दगी के हर परेशानी में खुल जाता है आशा का द्वार
कभी न डरूँगा, कभी न हटूँगा चाहे जान भी देनी पड़े

3. कितना अच्छा है वो कितना धन्य है वो येसु ही मेरे जीवन का साथी
मेरी जरूरतों को पूरी करता है वो कोई कमी नहीं कभी मुझको

After the hymn, the New Bishop may stand at the chair with staff and Mitre and gives his blessings.

## SOLEMN BLESSING

20. Assisting Priest : ईश्वरीय आशिर्वाद गृहण करने के लिए हम सर झुकाएँ।
The New Bishop Prays the Prayer of Blessing..........

हे प्रभु ईश्वर, तू बड़ी उदारता से अपनी प्रजा की रक्षा करता और प्यार से उसको संभालता है। जिन धर्मगुरुओं को तूने शिक्षक तथा गड़ेरिये के पद पर नियुक्त किया है, उन्हें विवेक का आत्मा प्रदान कर। उनका रेवड़ निरन्तर सिद्धता के मार्ग पर आगे बढ़े जिससे गड़ेरिये सच्चे आनन्द से भर जाऍं।

**All:** आमेन।

हे ईश्वर, अपने सामर्थ्य से तू हमें निश्चित समय तक इस धरती पर जीने देता है। जो सेवाकार्य हम तेरे नाम पर कर रहे हैं, उसपर कृपादृष्टि कर और इस लोक में हमें सच्ची और चिरस्थयी शांति प्रदान कर।

**All:** आमेन।

हे ईश्वर, तूने अब मुझे धर्माध्यक्ष के कार्य के लिए अभ्यंजित किया है, इस सेवकाई के द्वारा मैं तुझे नित प्रसन्न कर सकूँ। जनता तथा इस दीन सेवक का प्रेम–बंधन सुदृढ़ बना दे कि मैं अपने रेवड़ का नित्य सहारा प्राप्त कर सकूँ तथा रेवड़ अपने गड़रिये की प्रेमपूर्ण सुरक्षा का अनुभव करता रहे।

**All:** आमेन।

वे प्रभु के इच्छानुसार जीवन व्यतीत करें; सभी कृपादानों का उपयोग करें तथा आपके शासनकार्य में विश्वस्त सहायक बने रहें। मंगलमय और कल्याणकारी जीवन का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हो और एक दिन आपके साथ स्वर्गलोक के सहनागरिक बनें।

**All:** आमेन।

सर्वशक्तिमान् ईश्वर **पिता** + और **पुत्र** + और **पवित्र आत्मा** + का आशिर्वाद आपलोगों पर उतरे और सदा बना रहे।

**All:** आमेन।

# विसर्जन

मेरे मन के सुरंगों से भी, आता है तेरा नाम
दिल के सुख–दुःख तरंगों से भी, आता है तेरा नाम
तब शरण में आऊँ तेरे ही गुण गाऊँ
तेरी धडकन में नित बस जाऊँ
मेरे मन.... आता....
माँ मेरी माँ, माँ प्यारी माँ
ओ माँ, मेरी माँ, माँ प्यारी माँ

1. तू जो है प्यार की रागिनी, मेरे तन–मन में तू पूजनी
   पाप अंधेरे में दे रोशनी, प्रभु येसु की तू चाँदनी
   अपने भक्तों को दे दे जरा, तेरे दामन का शुभ आसरा
   तेरे चरणों में हम लाते सुर नित सुमन
   तेरे दिल को रिझाने सदा
2. तेरी आँचल की छाया तले, प्रभु येसु पे हम सब पले
   दुख काँटो में अनुराग मिले, हर आँसु सुमन में खिले
   रोते जग को तू दे दे जरा, तेरे दामन का शुभ आसरा
   तेरे चरणों में हम लाते जीवन के गम
   तेरी ममता को पाने सदा

**!! धन्यवाद !!** **!! धन्यवाद !!**

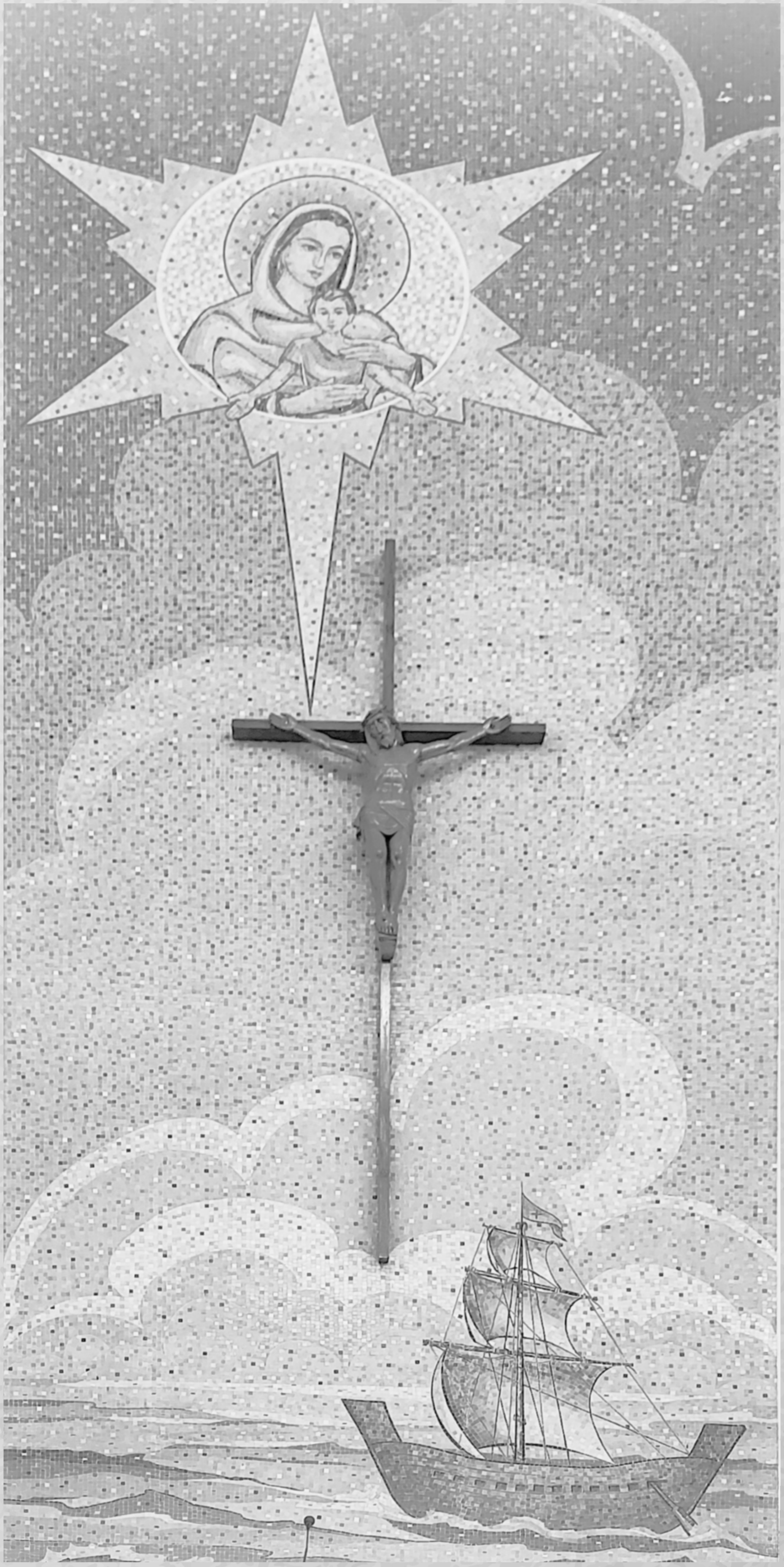

*"Rooted in the Word of God I lift up my hand to the Triune God, to grant me the generosity to give my self to the people of God, entrusted to my care, under the guidance and protection of Our Mother, Star of the Sea, like Jesus who emptied Himself on the Cross through proclamation of the Word and celebration of Eucharist.....*

''मैं, ईश्वरीय वचन की गहराई में से अपने हाथ त्रिएक परमेश्वर की ओर उठाता हूँ ताकि मुझे उदारता मिले जिससे मैं मुझे सौंपी गई प्रभु की प्रजा की रखवाली के लिये स्वयं को पूर्णतयः अर्पित करूँ; सागरीतारा, हमारी माँ के मार्ग दर्शन और संरक्षण में जैसे येसु ने ईश वचन के उद्घोषणा और यूखरिस्तीय समारोह द्वारा अपने को क्रूस पर खाली कर दिया।''